शोध सार

जब किसी परिवार में बच्चे का जन्म होता है तो उसके कानों में पड़ने वाली मधुर धुन गाँव या परिवार के लोकगीत होते हैं। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है वैसे-वैसे वह लोकगीत और लोककथाओं में रमता जाता है और उसमें भागीदार भी बन जाता है । यहीं से शुरुआत होती है लोक-संस्कृति की । लोकसंस्कृति के उद्घाटक लोकगीत ही माने जाते हैं। इनके माध्यम से ही लोक-संस्कृति उभर कर सामने आती है। किसी समाज या समाज में रहने वाली जनजाति और क्षेत्र विशेष रीति-रिवाजों, रहन-सहन और उस समाज की चेतना का उद्घाटन लोकसंस्कृति के द्वारा ही संभव माना जा सकता है। धर्म, पर्व-त्योहार, उत्सव, व्रत उपवास, पूजा पाठ, लोक-संगीत आदि सभी लोक-संस्कृति के पोषक तत्व हैं । जैसे-जैसे लोक-संस्कृति बदलती है या उसका स्वरूप बदलता है वैसे-वैसे लोकगीतों के रूप एवं स्वरूप में भी परिवर्तन होता रहता है। हम जानते हैं कि लोकगीतों में समाज की अंतरात्मा के भी स्पष्ट दर्शन होते हैं। समाज में जो कुछ भी घटित हो रहा है उसकी गूंज उस समाज के लोकगीतों में अभिव्यक्त होती रहती है।

लोकगीत केवल गीत नहीं है बल्कि यह एक समाज मनोवैज्ञानिक प्रणाली है । लोकगीतों को हम संस्कृतियों की अभिव्यक्ति के रूप में ही नहीं देख सकते अपितु लोकगीत लोकजीवन की एक प्रक्रिया है जिसमें हमारे जीवन का सब कुछ सम्मिलित है। मावची बोली के संदर्भ में हम देख पाते हैं कि मावची बोली के लोकगीतों में उस समाज की व्यथा, कथा, चिंता, प्रसन्नता, कल्पना, संवेदना और तमाम अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। मावची बोली लोकगीतों में घर परिवार की व्यथा-कथा है।

जब हम मावची समाज भाषी परिवेश की बात करते हैं तो देखते हैं कि भारत में रह रहे अन्य समुदाय की तरह मावची समाज की अपनी भी एक व्यवस्था रही है जिसमें इनके नियम कानून, रहन-सहन, खान-पान, पोशाक आदि आते हैं । मावची समाज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें महिलाओं को भी स्वतंत्र रूप से कार्य करने की आजादी है, सम्मान के स्तर पर भी और स्वभिमान के स्तर पर भी। इसलिए ज्यादातर स्त्री-पुरुष में समन्वय की भावना दिखाई देती है । अगर मावची समुदाय की धार्मिक दृष्टि से बात करें तो हम देखेंगे कि ये प्रकृति पूजक ज्यादा रहे हैं । इनके लिए धर्म मानव-प्रकृति के सहयोगात्मक संबंध की बात करता है। इसमें ऋतुचक्र के हिसाब से पूजा-अर्चना की जाती है । यदि एक वाक्य में कहें तो जनजातीय धर्म आमतौर एक प्रकृति धर्म है । मावची समाज की आर्थिक

चेतना की बात करें तो यह समाज मुख्य रूप से कृषि पर ही आधारित है । धान इस समुदाय की प्रमुख फसल है । इसके अलावा अन्य फसलें भी उगाई जाती हैं लेकिन इनके जीने का आधार कृषि ही है। अब बदलते समय के साथ मावची समाज का जनजीवन भी इससे अछूता नहीं रहा । इनके आर्थिक जीवन में भी धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है । शिक्षा तथा अन्य सेवाएँ उपलब्ध होने की वजह से ये लोग अपने क्षेत्र तक सीमित नहीं रहे बल्कि ये लोग अपने गाँव से दूर-दराज इलाकों में जीविकापार्जन के लिए जाने लगे हैं। अगर राजनीतिक चेतना की बात करते हैं तो पायेंगे कि इनका राजनीतिक जीवन काफी सुसंगठित रहा है । यहाँ के प्रत्येक गाँव में पंचायत होती हैं जिसमें सात सदस्य होते हैं पाँच मुख्य होते हैं । मुखिया ही अन्य सदस्य से विचार विमर्श करने के बाद पंचायत का फैसला लेता है ।

मावची बोली के लोकगीतों का विश्लेषण करने के बाद मैंने जाना कि लोकगीत मावची समाज के उस दर्पण के समान है जिसमें मावची बोली बोलने वाले लोगों का संघर्ष या यों कहें कि उनका पूरा इतिहास उभरकर आँखों के सामने आ जाता है । मावची समुदाय के लोकगीतों में उनके लोकजीवन, आशा-निराशा, सुख-दुःख, हर्ष-विषाद आदि सभी भावनाओं का सजीव चित्रण मिलता है । ये लोकगीत मावची समाज के भाविक उद्गार हैं जो न जाने कब से उन लोगों के साथ पीढ़ी-दर-पीढ़ी आते भावों की अभिव्यक्ति करते रहे हैं । उनके लोकगीतों में समाज की अपनी माटी की स्वाभाविक सुगंध आज भी बरकरार है । इस सुगंध को हम संस्कारगीत, श्रमगीत, रोडालीगीत, पर्व एवं त्योहार गीत, लोरीगीत और ऋतुगीत आदि में महसूस कर सकते हैं । इन लोकगीतों के विभिन्न रूपों के माध्यम से हम मावची समुदाय के आदिम रूप से परिचित होते हुए उसके विकास, उसके परिवर्तन को भी बख़ूबी समझ सकते हैं।